

कर्नाटक युद्ध

ब्रिटिश एवं फ्राँसीसी व्यापारिक उद्देश्यों के लिये भारत आए लेकिन वे अंततः भारत में राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने में लपित हो गए।

- दोनों की दृष्टि इस क्षेत्र में राजनीतिक शक्ति स्थापित करने पर थी।
- भारत में एंग्लो-फ्रेंच प्रतद्विंद्विता ने इतिहास में इंग्लैंड एवं फ्राँस की पारंपरिक प्रतद्विंद्विता को प्रतद्विंद्विता कथि।
- विशेष रूप से भारत में तीन कर्नाटक युद्धों के रूप में एंग्लो-फ्रेंच प्रतद्विंद्विता ने एक बार फिर तय कर लिया कि संपूर्ण भारत में शासन स्थापित करने के लिये फ्राँसीसी अंग्रेजों से अधिक उपयुक्त नहीं थे।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48)

पृष्ठभूमि:

- कोरोमंडल तट एवं इसके आंतरिक इलाकों को 'कर्नाटक' नाम यूरोपियों द्वारा दिया गया था।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध यूरोप के एंग्लो-फ्राँसीसी युद्ध का वस्तुतः था जो **ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार के लिये** हुआ था।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध को सेंट थोम (St. Thome) के युद्ध के रूप में जाना जाता है, जो फ्राँसीसी सेनाओं **एक कर्नाटक के नवाब अनवर-उद-दीन (Anwar-ud-din)** की सेनाओं के मध्य लड़ा गया था, अनवर-उद-दीन से अंग्रेजों ने सहायता की अपील की थी।

ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार के लिये युद्ध

- वर्ष 1740-1748 के मध्य यूरोप की अधिकांश महान शक्तियाँ मारिया थेरेसा (Maria Theresa's) के ऑस्ट्रियाई हैब्सबर्ग (Austrian Habsburg) राजवंश के उत्तराधिकार के मुद्दे के कारण संघर्षरत थीं।
 - इस युद्ध में फ्राँस, प्रशिया, स्पेन, बवेरिया के साथ पूरा यूरोप शामिल था और सैक्सनी ने ऑस्ट्रिया और ब्रिटन के खिलाफ प्रदर्शन किया।
 - **प्रथम साइलेशियन युद्ध (1740-42) एवं द्वितीय साइलेशियन युद्ध (1744-45)** युद्ध की ये दो शृंखलाएँ ऑस्ट्रिया एवं प्रशिया के आसपास केंद्रित थीं।
 - तीसरा युद्ध भारत एवं उत्तरी अमेरिका में औपनिवेशिक अधिकारों के लिये फ्राँस तथा ब्रिटन के मध्य चल रहे संघर्ष पर केंद्रित था।
 - युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेनाओं ने अपनी सैन्य दक्षता को सिद्ध किया।
- अक्टूबर 1748 में हस्ताक्षरित ऐक्स-ला-चैपल (Aix-la-Chapelle) की शांति संधि के साथ यह युद्ध समाप्त हुआ।
 - इस संधि के तहत फ्राँस ने लुईसबर्ग पर अपने अधिकार के बदले में ऑस्ट्रियाई नीदरलैंड पर अधिकार छोड़ने तथा ब्रिटन को मद्रास वापस देने पर सहमत व्यक्त की।
 - मारिया थेरेसा को भी ऑस्ट्रिया के शासक के रूप में मान्यता मिल गई थी।

युद्ध के कारण:

- यद्यपि फ्राँस, भारत में अपनी अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति के प्रतिसिद्ध था, उसने भारत में युद्ध के वस्तुतः का समर्थन नहीं किया लेकिन कमोडोर कर्टिस बनेट (Commodore Curtis Bennett) के नेतृत्व में अंग्रेजी नौ-सेना ने फ्राँस को उकसाने के लिये कुछ फ्राँसीसी जहाजों को ज़ब्त कर लिया।
 - फ्राँसीसी गवर्नर जनरल **मार्क्विस जोसेफ-फ्राँस्वा डुप्लेक्स** ने कर्नाटक के नवाब से सुरक्षा की अपील की और बदले में कर्नाटक के नवाब ने अंग्रेजों को चेतावनी दी कि उसका राज्य तटस्थ है और फ्राँसीसी अधिकृत क्षेत्र पर किसी भी हमले को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।
- इसके बदले में फ्राँस ने मॉरीशस के फ्राँसीसी गवर्नर **एडमरिल ला बोरडोनाइस** के नेतृत्व में मॉरीशस के जहाजी बेड़े, फ्राँस के टापू (Isle of France) की मदद से वर्ष 1746 में मद्रास पर कब्ज़ा कर लिया।
 - मद्रास पर कब्ज़ा करने से डुप्लेक्स एवं ला बोरडोनाइस के मध्य एक गंभीर वाद-विवाद शुरू हो गया।
 - डुप्लेक्स नवाब की तटस्थता के आदेश की अवहेलना के लिये मुआवजे के रूप में शहर को नवाब को सौंपना चाहता था, जबकि ला बोरडोनाइस (La Bourdonnais) शहर को पुनः अंग्रेजों को सौंपना चाहता था।

- यह वविाद लंबे समय तक चलता रहा, अंततः अनवर-उद-दीन ने हस्तक्षेप करने का नरिणय लया। उसने मद्रास में फ्रॉसीसियों को घेरने के लया अपने पुत्र महफूज़ खान (Mahfuzz Khan) के नेतृत्व में 10,000 सैनकों की एक सेना भेजी।

परणाम:

- सेनापति पैराडाइज़ (Captain Paradise) के नेतृत्व वाली एक छोटी फ्रॉसीसी सेना ने अड्यार नदी (River Adyar) के तट पर सेंट थोम में महफूज़ खान के नेतृत्व वाली मज़बूत भारतीय सेना को हरा दया।
- ऐक्स-ला-चैपल की शांति संधिपर हस्ताक्षर होने के बाद ऑस्टरियाई उत्तराधिकार के युद्ध को एक नषिकर्ष तक लाने के पश्चात् प्रथम कर्नाटक युद्ध वर्ष 1748 में समाप्त हो गया।
 - इस संधि की शर्तों के तहत मद्रास को पुनः अंगरेज़ों को सौंप दया गया और बदले में फ्रॉसीसियों को उत्तरी अमेरिका में अपने क्षेत्र पुनः प्राप्त् हो गए।

महत्त्व:

- इस युद्ध ने भारत में यूरोपियों की आँख खोल दी: इस युद्ध ने स्पष्ट कर दया कएक छोटी अनुशासति सेना भी बहुत बड़ी भारतीय सेना को आसानी से पराजति कर सकती है।
- इसके अतरिकित इस युद्ध ने दक्कन में एंग्लो-फ्रॉसीसी संघर्ष में नौ-सेना बल के महत्त्व को उजागर कर दया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54)

पृष्ठभूमि:

- द्वितीय कर्नाटक युद्ध की नींव भारत में एंग्लो-फ्रेंच प्रतदिवंदवति के कारण रखी गई थी।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध की समाप्तके पश्चात् भी भारत में दीर्घावधतिक शांति नहीं रही।
 - वर्ष 1748 में दक्कन के मुगल गवर्नर एवं हैदराबाद के अर्द्ध-स्वतंत्र नवाब नज़ाम-उल-मुल्क की मृत्यु हो गई।
 - नज़ाम की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार के लया संघर्ष आरंभ हो गया तथा ब्रिटिश एवं फ्रॉसीसी दोनों ने इस पर अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत की जो कविवाद का कारण बन गया।
 - फ्रॉसीसी गवर्नर डुप्लेक्स जो कप्रथम कर्नाटक युद्ध में सफलतापूर्वक फ्रॉसीसी सेना का नेतृत्व कर चुका था, ने अंगरेज़ों को हराने के लया स्थानीय राजवंशीय वविादों में दखल देकर दक्षिण भारत में अपनी शक्ति एवं फ्रॉसीसी राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने का प्रयास कया।
- परणामस्वरूप द्वितीय कर्नाटक युद्ध वर्ष 1749 से 1754 तक चला एवं अंगरेज़ों ने दक्षिण भारत में अपनी स्थिति मज़बूत की।

युद्ध के कारण:

- यह अवसर वर्ष 1748 में हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य के संस्थापक नज़ाम-उल-मुल्क की मृत्यु एवं उसी वर्ष कर्नाटक के नवाब दोस्त अली के दामाद चंदा साहबि की मराठाओं द्वारा रहिाई से उत्पन्न हुआ।
- हैदराबाद में नज़ाम के पुत्र नासरि जंग को हैदराबाद की राजगद्दी पर बैठाने का नवाब के प्रपौत्र मुज़फ्फर जंग ने वरिोध कया था, उसने यह कहते हुए हैदराबाद की राजगद्दी पर अपना दावा पेश कया क मुगल सम्राट ने उसे हैदराबाद के गवर्नर के रूप में नयुक्त कया था।
- इसके अतरिकित दक्षिण में कर्नाटक के नवाब पद के दो उम्मीदवार थे, यह एक सहायक पद था जो आधिकारिक रूप से नज़ाम पर नरिभर था।
- नज़ाम-उल-मुल्क को प्रांत में व्यवस्था बहाल करने के लया हस्तक्षेप करने हेतु बाध्य करने के पश्चात् अनवर-उद-दीन को वर्ष 1743 में कर्नाटक का नवाब नयुक्त कया गया था।
 - अनवर-उद-दीन नज़ाम के अधिकारियों में से एक था।
 - अनवर-उद-दीन की नयुक्तिपर चंदा साहब को नाराज़गी थी।
 - चंदा साहब कर्नाटक के एक पूर्व नवाब, दोस्त अली (1732-39) का दामाद था।
 - वर्ष 1741 में मराठों द्वारा त्रिचिनोपोली (Trichinopoly) में घेर लया जाने से पहले वह फ्रॉसीसियों का एक प्रभावी सहयोगी था।
- फ्रॉसीसियों ने दक्कन एवं कर्नाटक में क्रमशः मुज़फ्फर जंग तथा चंदा साहबि के दावों का समर्थन कया, जबक अंगरेज़ों ने नासरि जंग व अनवर-उद-दीन का साथ दया।

युद्ध का परणाम:

- मुज़फ्फर जंग, चंदा साहबि एवं फ्रॉसीसियों की संयुक्त सेना ने वर्ष 1749 में अंबूर के युद्ध (वेल्लोर के पास) में अनवर-उद-दीन को पराजति कर उसकी हत्या कर दी।
 - नवाब युद्ध में मारा गया और अपने पुत्र मोहम्मद अली को नवाब की दावेदारी हेतु वारसि के रूप में छोड़ गया।
- मुज़फ्फर जंग को हैदराबाद के नज़ाम एवं दक्कन के सूबेदार के रूप में पदावृद्ध कया गया तथा डुप्लेक्स को कृष्णा नदी के दक्षिण में स्थिति सभी मुगल क्षेत्रों का गवर्नर नयुक्त कया गया।
 - पुदुचेरी के आस-पास के क्षेत्र एवं उड़ीसा तट (मसूलीपत्तनम सहति) पर भी कुछ क्षेत्र फ्रॉसीसियों को सुपुर्द कय गए।

- हालाँकि कुछ महीने बाद मुज़फ्फर जंग की हत्या कर दी गई एवं फ़्राँसीसियों ने मुज़फ्फर जंग के चाचा सलाबत जंग को नए नज़ाम के रूप में पदारूढ़ कर दिया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के **रॉबर्ट क्लाइव** ने (बंगाल प्रेसीडेंसी के प्रथम ब्रिटिश प्रशासक) त्रिचिनीपोली में मोहम्मद अली को प्रभावी सहायता प्रदान करने में वफिल रहने के पश्चात् उसके समक्ष मदरास के गवर्नर सॉन्डर्स पर डायवर्जन आक्रमण (Diversiary Attack) करने का प्रस्ताव रखा।
 - उसने त्रिचिनीपोली पर सैन्य दबाव को हटाने के लिये अर्कोट (कर्नाटक की राजधानी) पर अचानक छापामार आक्रमण का सुझाव दिया जिसमें अंगरेज़ जीत गए।
 - कई युद्ध लड़ने के पश्चात् मोहम्मद अली ने चंदा साहबि की हत्या कर दी और बाद में कर्नाटक का नवाब बना।

परिणाम:

- डुप्लेक्स की नीति के कारण फ़्राँसीसी प्राधिकारी भारी वित्तीय घाटे के चलते परेशान थे, अतः वर्ष 1754 में उसे वापस बुलाने का निर्णय लिया गया।
- भारत में फ़्राँसीसी गवर्नर-जनरल के रूप में चार्ल्स रॉबर्ट गोदेहेउ (Charles Robert Godeheu) ने डुप्लेक्स का स्थान ग्रहण किया।
- गोदेहेउ ने अंगरेज़ों के साथ **बातचीत की नीति** अपनाई और उनके साथ **पुदुचेरी संधि** पर हस्ताक्षर किये, जिसके तहत अंगरेज़ एवं फ़्राँसीसी देशी रियासतों के झगड़ों में हस्तक्षेप न करने पर सहमत हुए।
 - इसके अतिरिक्त प्रत्येक पक्ष द्वारा संधि के समय के अपने अधिकृत क्षेत्रों की स्थितिबिहाल की गई थी।

नहितार्थ:

- यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय सफलता के लिये भारतीय सत्ता का सहयोग आवश्यक नहीं था बल्कि भारतीय सत्ता स्वयं यूरोपीय समर्थन पर निर्भर होती जा रही थी।
- कर्नाटक में **मोहम्मद अली** एवं हैदराबाद में **सलाबत जंग** एक-दूसरे के संरक्षक के बजाय प्रतद्विंदी बन गए।

तृतीय कर्नाटक युद्ध अथवा वांडविश का युद्ध (1758-63)

पृष्ठभूमि:

- यूरोप में जब ऑस्ट्रिया ने वर्ष 1756 में सिलिसिया को पुनर्प्राप्त करना चाहा तो **सप्तवर्षीय युद्ध (1756-63)** शुरू हो गया।
 - ब्रिटन एवं फ़्राँस पुनः एक-दूसरे के आमने-सामने आ गए।

भारत में युद्ध का क्रम:

- वर्ष 1758 में फ़्राँसीसी जनरल, काउंट थॉमस आर्थर डी लैली के नेतृत्व में फ़्राँसीसी सेना ने अंगरेज़ों के कलियों, सेंट डेवडि एवं वजियनगरम पर कब्ज़ा कर लिया।
- अंगरेज़ काफी आक्रामक हो गए थे एवं उन्होंने मसूलीपत्तनम में **एडमरिल डीएच (Admiral D'Ache)** के नेतृत्व में फ़्राँसीसी बेड़े (French Fleet) को भारी नुकसान पहुँचाया।

वांडविश का युद्ध:

- तीसरे कर्नाटक युद्ध का नरिणायक युद्ध 22 जनवरी, 1760 को तमलिनाडु के वांडविश (या वांडावासी) में अंगरेज़ों द्वारा जीता गया था।
 - अंगरेज़ जनरल आइरे कोटे (General Eyre Coote) ने काउंट डी लैली (Count de Lally) के नेतृत्व वाली फ़्राँसीसी सेना को बुरी तरह पराजित कर दिया एवं मार्क्विस डी बुसी (Marquis de Bussy) को बंदी बना लिया।
- 16 जनवरी, 1761 को आत्मसमर्पण किये जाने से पूर्व आठ महीने तक लैली द्वारा वीरतापूर्वक पुदुचेरी की रक्षा की गई थी।
 - पुदुचेरी, जिंजी (Gingee) और माहे पर अपना वरचस्व खो देने के पश्चात् भारत में फ़्राँसीसी शक्ति अपने नमिनतम स्तर पर पहुँच गई थी।
- लैली को युद्धबंदी के रूप में लंदन ले जाने के पश्चात् फ़्राँस के सुपुर्द कर दिया गया जहाँ उसे कैद किया गया एवं वर्ष 1766 में मृत्युदंड दे दिया गया।

परिणाम एवं महत्त्व:

- तृतीय कर्नाटक युद्ध नरिणायक साबित हुआ।
- तृतीय युद्ध **पेरिस शांति संधि (1763)** के साथ समाप्त हुआ, जिसके तहत पुदुचेरी एवं चंदन नगर पुनः फ़्राँस को सुपुर्द किये गए लेकिन वह उन क्षेत्रों में केवल व्यापारिक गतिविधियाँ ही कर सकते थे।
 - हालाँकि संधि ने भारत में फ़्राँसीसी कारखानों को बहाल कर दिया, लेकिन युद्ध के बाद फ़्राँसीसी राजनीतिक प्रभाव समाप्त हो गया।
- इसके पश्चात् फ़्राँसीसी, भारत में अपने समकक्षों पुर्तगाली एवं डच की तरह छोटे परिक्षेत्रों तथा वाणज्य तक ही सीमित रहे।
- भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश सर्वोच्च यूरोपीय शक्ति बन गई।

नाषिकर्ष

- वांडविश की वजिय के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में कोई यूरोपीय प्रतद्विंद्वी नहीं रहा । इस प्रकार वे संपूर्ण देश पर शासन करने के लिये तैयार थे ।
- गौरतलब है कि वांडविश के युद्ध में दोनों सेनाओं में भारतीय लोगों ने सपिाहियों के रूप में अपनी सेवाएँ दीं ।
- इससे पता चलता है कि चाहे जो भी पक्ष जीता हो, यूरोपीय आक्रमणकारियों द्वारा भारत का पतन अवश्यभावी था ।

अंगरेज़ों की वजिय एवं फ़्राँसीसियों की हार के कारण

- **ब्रिटिश पक्ष पर कम सरकारी नयित्रण:** ईस्ट इंडिया कंपनी एक नज़ी उद्यम थी ।
 - इससे लोगों में उत्साह एवं आत्मवशिवास की भावना उत्पन्न हुई ।
 - इस पर कम सरकारी नयित्रण होने के कारण कंपनी सरकार के अनुमोदन की प्रतीक्षा कयि बना तत्काल नरिणय ले सकती थी ।
 - वही फ़्राँसीसी कंपनी राज्य की एक व्यापारिक संस्था थी ।
 - इसे फ़्राँसीसी सरकार द्वारा नयित्त्रति एवं वनियिमति कयिा जाता था व सरकार की नीतियों और नरिणय लेने में देरी के कारण इसे कषति हुई ।
- **बेहतर ब्रिटिश नौसेना एवं बड़े शहरों में ब्रिटिश नयित्रण:** अंगरेज़ी नौसेना फ़्राँसीसी नौसेना से बेहतर थी, इसने फ़्राँस एवं भारत में फ़्राँसीसी कषेत्रों के मध्य महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्गों को रोकने में सहायता की ।
 - अंगरेज़ों के आधिपित्य में तीन महत्त्वपूर्ण स्थान कलकत्ता, बॉम्बे एवं मद्रास थे, जबकि फ़्राँसीसियों के पास केवल पुदुचेरी था ।
- **ब्रिटिश आर्थिक रूप से शक्तशाली थे:** फ़्राँसीसियों ने कषेत्रीय महत्त्वाकांक्षा के लिये अपने वाणजियिक हतियों को गौण कर दिया, जसिसे फ़्राँसीसी कंपनी के समकष वत्तीय अभाव की स्थिति उत्पन्न हुई ।
 - अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों के बावजूद, अंगरेज़ों ने कभी भी अपने वाणजियिक हतियों की उपेक्षा नहीं की ।
 - ब्रिटिशों की हमेशा से उनके प्रतद्विंद्वियों के खलिाफ युद्ध में महत्त्वपूर्ण रूप से मदद करने के लिये धन एवं अच्छी वत्तीय स्थिति थी ।
- **श्रेष्ठतर ब्रिटिश कमांडर:** भारत में अंगरेज़ों की सफलता का एक प्रमुख कारण ब्रिटिश कैप में कमांडरों की श्रेष्ठता थी ।
 - अंगरेज़ी पक्ष में नेताओं की लंबी सूची सर आइरे कूट, मेजर स्ट्रगिर लॉरेंस, रॉबर्ट क्लाइव एवं कई अन्य की तुलना में फ़्राँसीसी पक्ष में केवल डुप्लेक्स था ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/the-carnatic-wars>

